अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमी – जैन सिद्धान्त प्रभाकर पूर्वार्द्ध (परीक्षा 12 जुलाई, 2015)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	कुल योग
प्राप्तांक								
पूर्णांक	10	10	10	10	24	15	21	100
पुनः जाँच								

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए - 10x1 = (10)

(a) अश्वमित्र द्वारा प्रवर्तित वाद है -

(क) अबद्धपोतवाद (ख) स्थिरीकरणवाद

(ग) समुच्छेदवाद (घ) द्वैक्रियवाद ( )

(b) 'सुप्त' शब्द का अर्थ नहीं है -

(क) जो द्रव्यतः सोया हुआ हो (ख) जो नींद में न हो

(ग) जो प्रमादी प्रेयार्थी अज्ञानी हो (घ)भावतः धर्माचरण के प्रति अजागृत हो ( )

(c) संसारी व सिद्धों का विभिन्न अपेक्षाओं से स्वरूप तत्त्वार्थसूत्र में बतलाया गया है -

(क) प्रथम अध्याय में (ख) द्वितीय अध्याय में

(ग) तृतीय अध्याय में (घ) चतुर्थ अध्याय में ( )

(d) मति ज्ञान के कुल भेद हैं -

(क) 4 (ख) 28

(ग) 336 (घ) 340 ( )

(e) असंख्यातवर्ष की आयु वाले नहीं हैं -

(क) अकर्म भूमिज (ख) अन्तर्द्वीपज

(ग) कर्मभूमि युगलिक मनुष्य (घ) उत्तम पुरुष ( )

(f) तेरहवें और चौहदवें गुणस्थान में परीषह होते हैं -

(क) 11 (ख) 9

(ग) 12 (घ) 16 ( )

(g) सिद्ध भगवान में आत्माएँ होती हैं -

(क) 6 (ख) 7

(ग) 8 (घ) 4 ( )

(h) कर्मों के क्षय से होने वाला भाव है -

(क) क्रोध (ख) उपशमचारित्र

(ग) केवलदर्शन (घ) मतिज्ञान ( )

(i) भगवान महावीर ने किस आगम में अनेकान्त दृष्टि से विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देकर व्यावहारिक एवं दार्शनिक समाधान प्रस्तुत किया -

(क) आचारांग में (ख) सूत्रकृतांग में

(ग) भगवती में (घ) पन्नवणा में ( )

(j) मन-वचन-काया सहित प्रत्याख्यान किस विशुद्धि के अन्तर्गत आता है -

(क) विनय विशुद्धि (ख) अनुपालन-विशुद्धि

(ग) अनुभाषण विशुद्धि (घ) भावविशुद्धि ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) कषाय की मन्दता, विनीतता आदि गुणों के कारण विशेषशुद्धि हो जाने से मनुष्यायु का बन्ध नहीं होता है। ( )

(b) अज्ञान, अन्धविश्वास, मिथ्यादृष्टि, भ्रांति आदि भाव निद्रा के अन्तर्गत हैं। ( )

(c) गुरू के अधीन रहकर शिक्षा प्राप्त कर शीघ्र ही संसार से पार होने वाले संयमकवचधारी मुनि को भारण्ड पक्षी की उपमा दी गई है। ( )

(d) सर्वार्थ सिद्ध विमान के देवताओं को सिद्ध कहना भावनिक्षेप है। ( )

(e) संसारी आत्मा की गति सविग्रह और अविग्रह होती है। ( )

(f) मोहनीय कर्म के क्षय होने से चार बोल की प्राप्ति होती है। ( )

(g) कर्मों के क्षयोपशम से होने वाला भाव केवल ज्ञान है। ( )

(h) 'प्रवचन सारोद्धार' के अनुसार मर्यादा के निर्धारणपूर्वक अविरति का प्रतिज्ञारूप कथन करना प्रत्याख्यान है। ( )

(i) प्रत्याख्यान ग्रहण करते समय सद्गुरु के सम्मुख विनयमुद्रा में खड़े रहकर शुद्धपाठ का उच्चारण करना विनय विशुद्धि है। ( )

(j) प्रायश्चित्त कर पुनः व्रतों में स्थापन संलेखना-संथारा में करना चाहिए। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं हमेशा धर्माचरण के लिए जागृत रहता हूँ। .....

(b) मैं षट् पदार्थ प्ररुपणवाद का प्रवर्तक हूँ। .....

(c) मैं भव्य जीवों में ही प्रकट हो पाता हूँ। .....

(d) मैं संसारी तथा सिद्ध सभी जीवों में पाया जाता हूँ। .....

(e) मेरे उदय से सात परीषह होते हैं। . .....

(f) मुझ में लेश-मात्र भी कषाय नहीं होता। .....

(g) मैं जीवन की सरलता एवं चिन्तन की तटस्थता पर निर्भर करती हूँ। .....

(h) मेरे गुण कभी नष्ट नहीं होते। .....

(i) मैं मुक्ति का द्वार हूँ। .....

(j) मेरी स्थिति में एकासन करने के बाद भी आहार ग्रहण करना पड़ता है। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिए हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए : - **10x1=(10)**

(a)	अधिकरण	-	वेदनीय	.....
(b)	विवृत	-	जागृत	.....
(c)	क्रियमाण	-	पौषध	.....
(d)	घौरा	-	भगवती सूत्र	.....
(e)	अनन्त आत्म सामर्थ्य	-	अश्वमित्र	.....
(f)	तृणस्पर्श	-	महावीर	.....
(g)	धार्मिक	-	सम्यग्दर्शन	.....
(h)	परिव्राजक स्कन्दक	-	मुहुत्ता	.....
(i)	18 दोष	-	सिद्ध	.....
(j)	सुप्रत्याख्यान	-	योनि	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : - **12x2=(24)**

(a) विशुद्ध धर्म का श्रवण, दुर्लभ है कैसे?

.....

.....

(b) 'देवलोक' एवं आसुर, शब्द किन-किन के लिए प्रयुक्त हुए हैं?

.....

.....

(c) 'सद्धा परम दुल्लहा। स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

(d) 'केवलं बोहिं बुज्झिया। अर्थ समझाइए।

.....

.....

(e) 'पास' के कोई दो अर्थ लिखिए।

.....

.....

(f) अप्रमत्तता और मुक्ति का कारण स्वच्छन्दता-निरोध है। स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

(g) 'ण पउस्से' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

(h) अनुकूल स्पर्श एवं कषाय पर साधक कैसे विजय प्राप्त करें?

.....

.....

(i) प्रमाण और नय में क्या अन्तर हैं?

.....

.....

(j) तेरहवें गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं तथा कौन-कौन से?

.....

....

(k) स्याद्वाद का अर्थ लिखिए।

.....

....

(l) संलेखना-संथारा में करणीय 4 बातें लिखिए।

.....

....

प्र.6 निम्नलिखित गाथाओं का अर्थ स्पष्ट कीजिए : - **(5X3=15)**

(a) समावण्णाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु।

कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढोविस्संभिया पया।।

.....

.....

.....

.....

(b) **कम्मसंगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा।**

अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो।।

.....

.....

.....

.....

(c) **सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ।**

निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तव्व पावए।।

.....

.....

.....

.....

(d) **तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चई पावकारी।**

एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।।

.....

.....

.....

.....

(e) जे संखया तुच्छ परप्पवाई, ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा।

एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो, कंखे गुणे जाव सरीरभेए।।

.....

.....

.....

.....

प्र.7- निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए : - (7x3=21)

(a) जराय्यवण्डपोतजानां गर्भः।। अर्थ लिखकर विवेचन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) कितने प्रकार की आयु वाले जीव होते हैं? विवेचन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) 'उपयोग : स्पर्शादिषु का अर्थ लिखकर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) गुणस्थानों में बन्ध द्वार समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) गुणस्थानों में लेश्या द्वार समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) उप्पन्नेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा विवेचन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) क्रिया द्वार समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....